रजत कोंगर सर्पमीन के वायुआशय का चेन्नई से निर्यात

रजत कोंगर सर्पमीन *म्यूरेनिसोक्स सिनेरियस* को तमिल भाषा में 'विलंगु मीन' और 'कडल पाम्बू' और इसके वायुआशय को 'नेट्टी' कहते हैं। यह चेन्नई मात्स्यिकी पोताश्रय के अवतरणों में देखी गयी म्यूरेनिसोसिडे कुल की एकमात्र जाति है। इसका अधिकतर अवतरण बहुदिवसीय आनायकों में होता है। यह पूरे वर्ष उपलब्ध जाति है। बहुदिवसीय आनायकों का प्रचालन चेन्नई से 80-100 कि मी उत्तर पूर्व दिशा में 40-60 मी की गहराई में किया जाता है। कभी कभी काँटाडोरियों और यंत्रीकृत गिलजालों में सर्पमीन पकडी जाती है।

वर्ष 2002 से 2006 तक की अवधि की *एम. सिनेरियस* पकड के माहवार विश्लेषण ने अवतरणों में उतार-चढाव व्यक्त किया। जून महीने में श्रृंगकाल के साथ जून-अक्तूबर में पकड उच्च थी। वर्ष 2002-2006 के दौरान *एम. सिरेनियस* की आकलित वार्षिक पकड क्रमशः 53.0, 40.9, 27, 20.2 और 27 टन थी।

स्थानीय व्यापारियाँ सर्पमीनों को खरीदकर पेट से वायुआशय लेते है और आकार के अनुसार प्रति कि ग्रा 10 से 60/- रु. पर बेच देते है।

वायुआशयों को ताज़े पानी में धोकर एक कमरे में रस्सी में लटकाकर एक हफ्ते तक सुखाया जाता है। सुखाये गये वायुआशयों को प्रति कि ग्रा 2000-4000/- रु. में बेच देते है।

आज सर्पमीनों के वायुआशयों के साथ चर्म, पंखों, क्लोमों कर्षणियों, हड्डियों और दाँतों का भी निर्यात किया जाता है। वायुआशयों को सिंगपुर और होंकोंग को निर्यात किया जाता है जहाँ सूप और औषधों के निर्माण में इसका उपयोग किया जाता है।

चित्र 1 - सर्पमीन का वायुआशय

मुख्य शब्द/Keywords

सर्पमीन - eelfish
वायु आशय - air bladder

पत्रव्यवहार

एस. राजपाकियम, एस. मोहन, एस.के. बालकुमार और पी. पूवण्णन
सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केंद्र, चेन्नई, तमिलनाडु